स्नातकोत्तर हिंदी कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को हिंदी साहित्य से परिचित कराते हुए उनके भीतर साहित्य के प्रति गहन अभिरुचि पैदा करना है जिससे कि वे समग्र रूप से साहित्य से परिचित हो सकें एवं उनके भीतर की रागात्मिका शक्ति का विकास हो सके | हिंदी साहित्य का इतिहास : आरम्भ से रीतिकाल तक (HIL 440) नामक पाठ्यक्रम में साहित्येतिहास के महत्त्व के साथ इतिहास लेखन की परम्परा से विद्यार्थियों को अवगत कराना है | आदिकाल के सिद्ध, नाथ साहित्य,जैन साहित्य की उपादेयता,भक्तिकाल के सांस्कृतिक महत्त्व एवं रीतिकाल की प्रमुख काव्य विशेषताओं को उक्त पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाएगा | खड़ी बोली के पूर्व का काव्य : नीति काव्य,राम काव्य, कृष्ण काव्य,सूफी (HIL 401) का उद्देश्य भक्तिकालीन काव्य-धारा के विकास को समझना है | हिंदी काव्य जगत में निर्गुण और सगुण काव्य-धारा की जो सांस्कृतिक विरासत है उसे उद्घाटित करने के साथ विद्यार्थियों के मन में उसके साहित्यिक अवदान को स्पष्ट करना इसका प्रमुख ध्येय है | हिंदी की उत्पत्ति विकास और बोलियाँ : पुरानी हिंदी, दकिनी भाषा परिचय (HIL 408) नामक पाठ्यक्रम पूर्णतः भाषा परिचय और उसके विकास से जुड़ा हुआ है | राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिंदी के समक्ष व्याप्त चुनौतियों को निर्दिष्ट करना भी इसका एक पहलू है जिसे पूर्णता में देखने का प्रयास किया गया है | कहानी (HIL 410) पाठ्यक्रम प्रेमचन्द को केंद्र में रखकर प्रेमचन्द पूर्व एवं प्रेमचंदोत्तर हिंदी की किस्सागोई कला को समझना है जिससे कि विद्यार्थियों की कथा की भारतीय परम्परा के अविरल सूत्र प्राप्त हो सकें | साहित्य सिद्धांत : प्राचीन (HIL 430) के माध्यम से भारतीय मनीषा के विभिन्न सम्प्रदायों उनके व्याख्याकारों को समझने के साथ काव्य के हेतु एवं प्रयोजन को भी विद्यार्थियों को समझाना है जिससे कि साहित्य को रचे जाने एवं पढ़े जाने के पीछे छिपी भारतीय चेतना का अवगाहन किया जा सके | पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत (HIL 442) का उद्देश्य पश्चिम की साहित्य के सन्दर्भ में समझ से विद्यार्थी को जोड़ना है जिससे कि अपनी सहज प्रतिभा का विकास करते हुए विद्यार्थी साहित्यिक सिद्धांत के भारतीय एवं पश्चिमी दोनों ही प्रतिमानों से अवगत हो सके | उपन्यास (HIL 409) नामक पाठ्यक्रम के माध्यम से हिंदी के प्रतिनिधि उपन्यासों को चिंतन की गहराई में जाकर समझना एवं विद्यार्थियों को समझाना प्रमुख ध्येय है | स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य (HIL 444) नामक पाठ्यक्रम स्वतंत्रता के बाद साहित्य में आ रहे परिवर्तनों एवं विकास को समर्पित है जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को प्रगतिवादी, प्रयोगवादी,नई कविता,समकालीन हिंदी कविता की केन्द्रीय चेतना से परिचित कराना है | आदिकालीन साहित्य (HIL 510) हिंदी साहित्य के आदिकालीन परिप्रेक्ष्य को उद्घाटित करता है जिसे सिद्ध साहित्य,नाथ साहित्य,जैन साहित्य,लौकिक साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों को पढ़ाना है जिससे कि हिंदी साहित्य की प्राचीन विरासत से विद्यार्थी परिचित हो सकें | रीति काव्य (HIL 447) रीतिबद्ध,रीति सिद्ध एवं रीति मुक्त कविता को तद्युगीन परिवेश के साथ विद्यार्थियों को अवगत कराता है जिससे कि कलात्मक विकास के साथ मूल्य जनित गिरावट को युगीन संदर्भ में विद्यार्थी देख सकें | इसी तरह हिंदी नाटक और रंगमंच (HIL 417) नामक पाठ्यक्रम नाटक के सन्दर्भ में, खड़ी बोली का काव्य : हिंदी की लम्बी कविताएँ (HIL 406) नामक पाठ्यक्रम लम्बी कविता के सन्दर्भ में,विमर्श विश्लेषण (HIL 503) नामक पाठ्यक्रम समाज में हाशिए पर रह रहे समाज की चुनौतियों को जनसामान्य के समक्ष रखते हैं | खड़ी बोली का काव्य : प्रकृति काव्य (HIL 404) हिन्दी की छायावादी कविता का शब्द-चित्र प्रस्तुत करता है वहीं हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल (HIL 441) आधुनिकता के स्वरूप को परिभाषित करते हुए हिंदी साहित्य के आधुनिक काल को देखने का प्रयास है | हिंदी के किसी एक साहित्यकार का विशेष अध्ययन (HIL 448) एवं हिंदी की किसी एक विधा विशेष का अध्ययन (HIL 449) जैसे पाठ्यक्रम भी हैं जो साहित्य की मूल इकाई एवं साहित्यकार केन्द्रित हैं |

इस तरह स्नातकोत्तर हिंदी का पूरा पाठ्यक्रम हिंदी भाषा एवं साहित्य की एक अंतर्यात्रा है जो शिक्षार्थी करता है | जिज्ञासा-प्रश्नाकुलता एवं गहन चिंतन द्वारा अपने देश एवं संस्कृति के दाय से परिचित होता है |